अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 20 जुलाई, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल योग
प्राप्तांक								
पूर्णांक	10	10	10	10	24	27	09	100
पुनः जाँच								

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'पवेइया ' का अर्थ है -

(क) सुना गया है (ख) माना गया है

(ग) जाना गया है (घ) देखा गया है ( )

(b) थैली से उत्पन्न होने वाले जीवों को कहा जाता है -

(क) रसज (ख) जरायुज

(ग) पोतज (घ) स्वेदज ( )

(c) संयत विरत आदि गुण वाले साधु-साध्वी कंद मूल आदि कितने प्रकार की वनस्पति की विराधना नहीं करें -

(क) 10 (ख) 08

(ग) 05 (घ) 12 ( )

(d) 'उरूंसि वा' शब्द का अर्थ होता है -

(क) हाथ पर (ख) पैर पर

(ग) भुजा पर (घ) जांघ पर ( )

(e) नाम कर्म के उदय से बनने वाली शरीर की आकृति विशेष को कहते हैं -

(क) शरीर (ख) अवगाहना

(ग) संहनन (घ) संस्थान ( )

(f) पहली नारकी की उत्कृष्ट अवगाहना होती है -

(क) 7 धनुष (ख) पौने 8 धनुष

(ग) पौने 8 धनुष 6 अंगुल (घ) 7 अंगुल ( )

(g) वायुकाय में कितने शरीर पाए जाते हैं -

(क) 05 (ख) 04

(ग) 03 (घ) 02 ( )

(h) ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना के कितने भव मनुष्य संबंधी होते हैं -

(क) 06 (ख) 08

(ग) 09 (घ) 10 ( )

(i) 'जो जिनेन्द्रों द्वारा प्ररूपित है उसे सत्य एवं निशंक मानता है ' यह वर्णन किस सूत्र में आया है -

(क) पन्नवणा (ख) भगवती

(ग) आचारांग (घ) ठाणांग ( )

(j) मनुष्य भव में मनुष्यायु का बंध कौनसी अवस्था में संभव है -

(क) मिथ्यात्व (ख) सम्यक्त्व

(ग) मिथ्यात्व सम्यक्त्व दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं ' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) आघात, टकराहट और अग्नि आदि शस्त्रों से वायु सचित्त होती है। ( )

(b) पंखे की हवा, इंजन की वाष्प और गैस आदि की वायु अचित्त संभव है। ( )

(c) छः प्रकार के अदत्त का ग्रहण मुनि के लिए दो करण तीन योग से जीवनभर के लिए वर्जित बतलाया है। ( )

(d) असन्नी मनुष्य में साढ़े सात प्राण पाए जाते हैं। ( )

(e) चौरेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति 12 वर्ष होती है। ( )

(f) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में छः उपयोग पाए जाते हैं। ( )

(g) युगलिक मनुष्य में पद्म और शुक्ल लेश्या नहीं पायी जाती। ( )

(h) वीर स्तुति का स्वाध्याय दिन-रात्रि के प्रथम प्रहर एवं अन्तिम प्रहर में ही करना चाहिए। ( )

(i) भगवान महावीर आयु कर्म से रहित हो गये। ( )

(j) सुमेरू पर्वत तीन लोकों को स्पर्श करता हुआ स्थित है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) हम ऐसे जीव हैं जो सुख-दुःख को और हर्ष-खेद को व्यक्त करते हैं। .....

(b) मुझे छठा महाव्रत कहा गया है। .....

(c) मैं मीठे पानी का शस्त्र हूँ। .....

(d) मैं वह शक्ति हूँ जो आने वाले कर्मों को आत्मा के साथ चिपका देती हूँ। .....

(e) मैं वह साधन हूँ जिसके द्वारा जीव शब्दादि विषयों को ग्रहण करता है। .....

(f) मेरे द्वारा सामान्य रूप से वस्तु के स्वरूप को जाना जाता है। .....

(g) मैं सब ताराओं में प्रधान हूँ। .....

(h) मैं सब वनों में श्रेष्ठ हूँ। .....

(i) मैं सब गन्धों में प्रधान हूँ। .....

(j) मैं सब समुद्रों में प्रधान हूँ। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a)	पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट स्थिति	-	10 हजार वर्ष	.....
(b)	वायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति	-	7 हजार वर्ष	.....
(c)	वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति	-	3 अहोरात्रि	.....
(d)	अप्काय की उत्कृष्ट स्थिति	-	3 हजार वर्ष	.....
(e)	तेऊकाय की उत्कृष्ट स्थिति	-	22 हजार वर्ष	.....
(f)	लक्ष्मी का निवास	-	महावीर	.....
(g)	क्रोध	-	विनय	.....
(h)	मान	-	स्त्रीवेद	.....
(i)	माया	-	घुन	.....
(j)	अनियत आचारी	-	प्रेम	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए :- **12x2 = (24)**

(a) वनस्पति के सात भेद लिखिए।

.....

.....

(b) आचारांग सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में किसकी हिंसा नहीं करना ही धर्म कहा है?

.....

.....

(c) तेजस्काय की रक्षा के लिए संयत विरत आदि गुण वाला साधु क्या करे ?

.....

.....

(d) **बादर पृथ्वीकाय के पांच उदाहरण बताइए।**

.....

.....

(e) **नारकी एवं देवों में कितने योग पाए जाते हैं व कौन-कौनसे ?**

.....

.....

(f) **पहली नरक के नेरिये की स्थिति बताइए।**

.....

.....

(g) **पर्याप्ति किसे कहते हैं ? अथवा तीन विकलेन्द्रिय की अवगाहना बताइए।**

.....

.....

निम्न गाथाओं का भावार्थ लिखिए -

(h) **ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा।**

निव्वाण सेट्ठा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि णाणी।।

.....

.....

.....

(i) **खेयन्नए से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी।**

जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि।।

.....

.....

.....

.....

(j) **से पन्नया अक्खयसायरे वा, महोदही वावि अणंतपारे।**

अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुईमं।।

.....

.....

.....

(k) **जघन्य ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना करने वालों के भव लिखिए।**

.....

.....

(l) **उत्कृष्ट ज्ञानाराधना, उत्कृष्ट दर्शनाराधना तथा जघन्य चारित्राराधना का फल लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दीजिए :- **9x3 = (27)**

(a) **त्रस जीव के मुख्य आठ भेद बताइए।**

.....

.....

.....

(b) **त्रस जीव के लक्षण बताइए।**

.....

.....

.....

(c) **पांच स्थावरों में गति आगति समझाइए।**

.....

.....

.....

(d) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अथवा गर्भज मनुष्य में अवगाहना समझाइए।

.....

.....

.....

(e) समुद्घात द्वार को समझाइए।

.....

.....

.....

(f) माया विजय के तीन उपाय लिखिए।

अथवा

लोभ उत्पत्ति के तीन कारण लिखिए।

.....

.....

.....

(g) क्रोध उत्पन्न होने के कोई तीन कारण लिखिए।

.....

.....

.....

(h) आराधना किसे कहते हैं ?इसके प्रकारों को समझाइए।

.....

.....

.....

(i) अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइ।

सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंत वदातसुक्कं।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

प्र.7 निम्न गाथांश को पूर्ण करते हुए अर्थ लिखिए :- **3x3 = (09)**

(a) **'जया निव्विंदिए .....**

.....

.....

..... बाहिरं।'

(b) **'जया धुणइ ..... चाभिगच्छइ।'**

अथवा

'पच्छावि ते ..... बंभचेरं च।'

.....

.....

.....

.....

(c) **से पव्वए .....**

.....

.....

..... भोमे।